The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय परीक्षा व मूल्यांकन में योगदान

सरिता सिंह और श्रद्धा सिंह
टी.डी.पी.जी कॉलेज जौनपुर उत्तर प्रदेश
ranvijay19820@Gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मूल्यांकन, परीक्षण, शिक्षार्थी

DOI:
10.5281/zenodo.14107133

ABSTRACT

शिक्षा समाज को बहुत प्रभावित करता है। परीक्षा और मूल्यांकन शिक्षा के महत्त्वपूर्ण अंग है। परीक्षा, छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन का सटीक और विश्वसनीय माप प्रदान करता है और मूल्यांकन छात्रों को सीखने में मदद करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय परीक्षा व मूल्यांकन में विशेष योगदान है। इसके अनुसार, परीक्षाओं को आसान बनाया जाएगा और छात्रों का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा शामिल है। इसमें परीक्षा और मूल्यांकन को लेकर काफी बदलाव किया गया है। NEP 2020 भारतीय शिक्षा जगत में एक नई क्रांति ला रही है। इसमें समग्र विकास, आलोचनात्मक चिन्तन और योग्यता आधारित प्रणाली तैयार करना है, जो समावेशी और शिक्षार्थी केन्द्रित हो। स्कूली शिक्षा के प्रत्येक चरण के लिए नए समावेशी मूल्यांकन दिशानिर्देश तैयार करना। शिक्षकों को सीखने के रूप में मूल्यांकन और शिक्षकों के लिए मूल्यांकन करने की क्षमताओं को बढ़ाना। कक्षा में रचनात्मक एवं अनुकूली मूल्यांकन संस्कृति की स्थापना करना NEP 2020 के नए मूल्यांकन का कार्यान्वयन है। हालांकि इन विचारों को अमल में लाना मुश्किल हो सकता है, लेकिन छात्रों और समाज के लिए दीर्घकालिक लाभ इसे सार्थक बनाते है। बदलते समय के अनुसार, परीक्षा एवं मूल्यांकन में बदलाव करना अति आवश्यक है। समाज और राष्ट्र को विकसित करने के लिए शिक्षा नीति को बदलना भी जरूरी है। और तभी हम वैश्विक स्तर पर विकसित देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकेगें।

परिचय: परीक्षण और मूल्यांकन यह दो शब्द सफलता के दो पहलू हैं और दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। एक व्यक्ति को अगर सफल होना है तो उसकी परीक्षा भी जरूरी है और अगर परीक्षा दिया है तो उसका मूल्यांकन भी जरुरी है। शिक्षा जगत में भी इन दोनो शब्दों का महत्व पूर्ण भूमिका है। परिक्षण का अर्थ है योग्यता और क्षमता

को परखना तथा मूल्यांकन का अर्थ है किसी चीज़ के मूल्य, योग्यता या महत्व के बारे में निर्णय लेने के लिए की जाने वाली व्यवस्थित प्रक्रिया। इन दोनों के योगदान से ही किसी शिक्षार्थी की योग्यता का आकलन करना आसान हो जाता है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिक्षण और मूल्यांकन" को शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण बताया गया है। इस नीति के अनुसार, परीक्षण हर स्तर पर होना चाहिए और उसका मूल्यांकन भी हो। बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परीक्षण और मूल्यांकन को लेकर काफी बदलाव किए गए है।

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" में वर्णित परीक्षण और मूल्यांकन काफी हद तक प्राचीन शिक्षा प्रणाली" के परीक्षण और मूल्यांकन के समकक्ष है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में भी परीक्षण और मूल्यांकन शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर होते थे। प्राचीन काल में शलाका परीक्षाएँ होती थी जिसमें याद्दच्छिक रूप से किसी भी प्रश्न को पूँछ लिया जाता था। यह परीक्षा प्रणाली आज की योगात्मक मूल्यांकन प्रक्रिया के समकक्ष थी।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में परीक्षण और मूल्यांकन के लिए कई तरीके अपनाए जाते थे

गुरु अपने छात्रों पर पर्याप्त ध्यान रखते थे और वार्तालाप और प्रश्नोत्तर के जरिए उनके ज्ञान और क्षमताओं का पता लगाते थे। छात्रों को मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। → शलाका परीक्षा में, छात्रों को शलाका ग्रंथ के अलग-अलग हिस्सों को पढ़ना होता था । यह क्रम तब तक चलता था जब तक कि आचार्य और अन्य परीक्षक संतुष्ट न हो जाते। इसके बाद प्रश्नोत्तर और शास्त्रार्थ का चरण आता था।

समय के साथ-साथ शिक्षा प्रणाली बदली और परीक्षण और मूल्यांकन का स्तर भी बदल गया । प्राचीन शिक्षा प्रणाली के बाद "मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली " आई। नए शासक आए, अपना शासन किया और पूरी शिक्षा प्रणाली ही बदल गयी। भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई और शिक्षा धर्म-आधारित हो गई। समाज हिन्दु मुस्लिम में बंट गया| इस्लामी शिक्षा का प्रचार प्रसार होने लगा। हिन्दु हिन्दु-शिक्षा ग्रहण करने लगे और मुस्लिम इस्लामी शिक्षा ग्रहण करने लगे । और इस तरह से परीक्षण और मूल्यांकन में भी परिवर्तन होने लगे । शिक्षा ज्ञान के साथ-साथ धर्म आधारित हो गई।

मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के बाद "आधुनिक शिक्षा प्रणाली" आई । आधुनिक शिक्षा प्रणाली उद्देश्य छात्रों को ज्ञान से सशक्त बनाना और उन्हें जीवन के लिए प्रशिक्षित करना है। ऐसी शिक्षा प्राप्त करने के बाद एक छात्र व्यावहारिक जीवन में चुनौतियों में अधिक कुशलता से सामना करने में सक्षम होगा और सामाजिक सुधार की दिशा में योगदान दे सकेगा| आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारत आजादी के बाद तीन शिक्षा नीति आई| पहली 1968", दूसरी 1986 और तीसरी 2020 में|

पहली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में आई जिसमे परीक्षण और मूल्यांकन के बारे में महत्त्वपूर्ण विन्दु निम्न है –

छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए "परख ""PARAKH" नाम का एक राष्ट्रीय आकलन केन्द्र बनाया गया ।

कक्षा 10 और 12वीं की परीक्षाओं में बदलाव किए गए। उन परीक्षाओं में भविष्य में सेमेस्टर या बहुविकल्पीय प्रश्नों को शामिल किए जा सकते हैं।

↗↘—छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साफ्टवेयर का इस्तेमाल किया गया।

दूसरी, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 " में आई जिसमे परीक्षण और मूल्यांकन से जुड़ी खास बातें

→ -> इस नीति में मूल्यांकन को नियमित करने पर जोर दिया गया। बच्चे के हर पहलू का मूल्यांकन किया जाना था ताकि परीक्षा के दौरान बच्चे पर दबाव कम हो।

→ -> मूल्यांकन की प्रकृति व्यापक और उद्देश्य आधारित थी। →

-> निरंतर मूल्यांकन से छात्रों का बोझ कम होता है।

->मूल्यांकन से शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार होता है।

-> मूल्यांकन से छात्रों के संज्ञानात्मक →और मनोप्रेरणा कौशल का विकास होता है

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के अन्र्तगत परीक्षा प्रणाली को अधिक विश्वसनीय बनाने का कार्य किया गया है जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में विद्याथियों के मूल्यांकन को बेहतर बनाने का कार्य करता है।

बदलते समय के अनुसार शिक्षा नीति में बदलाव जरूरी था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुधार करते हुए एक नई शिक्षा नीति लाई गई "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" । इस नीति का लक्ष्य भारत को एक "वैश्विक ज्ञान महाशक्ति ""Global Knowledge, Superpower" बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्वामी अध्यक्ष कस्तूरी रंगन हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा और विकास, के इष्टतम उपयोग के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव बहुत जरूर है।

मूल्यांकन एवं परीक्षण :-

- नियमित औपचारिक और योग्यता आधारित होना चाहिए
- छात्रों में शिक्षा और विकास को बढ़ावा मिलना चाहिए
- लर्निंग के मूल्यांकन पर जोर देना चाहिए
- →उच्चस्तरीय कौशल की जाँच (विश्लेषण) महत्त्वपूर्ण सोच और वैचारिक स्पष्टता होना चाहिए।
- →शिक्षक शिक्षण प्रक्रियाओं के संशोधन में स्कूली शिक्षा प्रणाली को मदद मिलना चाहिए।

" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 " का लक्ष्य 21वीं सदी के लिए छात्रों को तैयार करना है। इनके रचनात्मक सोच को बढ़ाना है। लर्निंग आउटकम के किए टूल और संसाधन तैयार करना है। योगात्मक आकलन के बजाए सीखने के नियमित व रचनात्मक मूल्यांकन पर ध्यान देना चाहिए। रटने वाली प्रथा को हटाकर रचनात्मक कौशल विकास पर जोर देना चाहिए।

राष्ट्रीय मूल्यांकन केन्द्र परख का गठन लिया गया है जिससे बुनियादी स्तर से उच्च शिक्षा तक प्रत्येक विषय के सीखने के परिणामों, क्षमताओं और प्रस्तावों के साथ आकलन टूल शामिल किया जाएगा। सीखने की अक्षमताओं वाले सभी छात्रों के लिए समान पहुँच और अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए परख दिशानिर्देश तैयार करेगा।

परख" PARAKH"सभी परीक्षा बोर्डो का भी मार्गदर्शन करेगा।

→प्रत्येक बच्चे के समग्र विकास के लिए रिर्पोट कार्ड का नया डिजाइन बनाया जाएगा जो 360′ समग्र प्रगति कार्ड होगा।

→बोर्ड परीक्षा में बदलाव, लचीलापन और बोर्ड परीक्षा के दो मौके का विकल्प होगा जितका उद्देश्य परीक्षा के दवाव को कम करना है। छात्र अपने रुचि के अनुसार विषय चुन सकते हैं।

→ →एनसीईआरटी (NCERT) और एनसीटीई (NCTE), प्रतिभाशाली बच्चो की शिक्षा के लिए दिशानिर्देश विकसित करेंगें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्‌देश्य विभिन्न परिवर्तनों को पेश करके भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली बदलना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा में नई अकादमिक क्रेडिट प्रणाली शुरू करने का प्रस्ताव है जो छात्रों को अपनी गति से पाठ्यक्रम लेने और प्रत्येक कोर्स पूरा करने के लिए क्रेडिट जमा करने की अनुमति देगा। यह प्रणाली छात्रों को संस्थानों के बीच क्रेडिट स्थानांतरित करने की भी अनुमति देगी, जिससे छात्रों के लिए संस्थानों को बदलना या अतःविषय पाठक्रमों का पीछा करना आसान हो जाएगा । नीति, मूल्यांकन और ग्रेडिग प्रणाली में बदलाव का प्रस्ताव करती है ताकि इसे अधिक व्यापक और समग्र बनाया जा सके। नीति का उद्देश्य रटने की आदत पर जोर कम करना और आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को बढ़ावा देना। नीति, मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक वस्तुनिष्ठ और पारदर्शी बनाने के लिए प्रौद्योगिकी – आधारित मूल्यांकन उपकरणों मे उपयोग का भी प्रस्ताव करती है।

शिक्षा में प्रस्तावित परिवर्तनों का उद्देश्य, प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और नवीन बनाता है। यह परिवर्तन न केवल छात्रों को लाभान्ति करेंगे बल्कि समग्र रूप से देश के विकास में योगदान देंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षकों का भी मूल्यांकन आवश्यक है।

→शिक्षकों को हर साल कम से कम 50 घंटे का व्यावसायिक प्रशिक्षण (CPD) लेना होगा। इसमें कार्यशालाएं, सेमिनार, ऑनलाइन, पाठ्यक्रम और सहकर्मी सीखने के अवसर शामिल होंगे।

→ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रो के प्रदर्शन के आकलन में शिक्षकों के योगदान को वरीयता दी गई है।

→ शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होकर छात्रों के कौशल, ताकत और विकास के क्षेत्रों के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

→ आतंरिक मूल्यांकन और बाहरी मूल्यांकन को एक साथ जोड़ने से छात्र के प्रदर्शन का गहन मूल्यांकन किया जा सकता है।

→ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, के अनुसार, मूल्यांकन नियमित, रचनात्मक और योग्यता आधारित होना चाहिए।

नीति के अनुसार, आकलन में अधिगम के लिए आकलन पर ध्यान देना चाहिए।

राष्ट्रीत शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए SSSA, PARAKH और IITI की स्थापना का प्रस्ताव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा से जुड़े कुछ प्रमुख बदलाव-

→ शिक्षा में नैतिकता, ताकत, करुणा और संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया जाएगा

→शिक्षा में वैचारिक सम्मत रचनात्मकता आलोचनात्मक सोच, मानवीय नैतिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों पर जोर दिया जाएगा।

→शिक्षा में प्रयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया जाएगा।

→शिक्षा में हस्तगतिविधि आधारित अधिगम, कुल- एकीकृत शिक्षा, कहानी – आधारित शिक्षा शास्त्र आदि को शामिल किया जाएगा।

→शिक्षकों की भर्ती के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता चार साल की इंटीग्रेटेड बीएड होगी

→6 साल के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ECCE) पर जोर दिया जाएगा।

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" प्रौद्योगिकी द्वारा सक्षम ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली जैसे नवीन मूल्यांकन विधियो के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। ऑनलाइन परीक्षाएँ कम्प्यूटर-आधारित मूल्यांकन ऐ आई आधारित ऑनलाइन प्रॉक्टरिंग और अनुकूली परीक्षण कुछ ऐसे रास्ते है जिसके माध्यम से प्रौद्योगि की मूल्यांकन प्रक्रिया को बेहतर और सरल बना सकते हैं।

उपसंहार

राब्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० एक ऐसे समय का मार्ग प्रशस्त करता है जहाँ परीक्षण छात्रों की क्षमताओं का सटीक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे वे समृद्ध हो सके और हमेशा बदलती दुनिया में बहुमूल्य योगदान दे सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति

2020 का उद्देश्य परीक्षणों और मूल्यांकनों की प्रकृति को बदलकर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो अधिक समावेशी और शिक्षार्थी केन्द्रित हो। छात्रों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना, महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल विकसित करने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 महत्वपूर्ण योगदान होगा। परन्तु वास्तविकता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य पूर्ण होना आसान तो नहीं परन्तु मुश्किल भी नहीं है। अगर हर राज्य, हर संस्थान, हर विद्यालय, महाविद्यालय, दृढ़ता से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नियमो को लागू करे और उसका अनुसरण करे तो, नीति का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा और उस लक्ष्य भारतको "वैश्विकज्ञानमहाशक्ति " बनाना पूर्ण हो जाएगा।

संदर्भ :-

1. WWW.education.gov. in
2. en. Wikipedia.org
3. Oldrov. 1bp. world
4. Google